शौर्य और प्रविधि-ज्ञान के प्रतीक - अर्जुन

देवर्षि कलानाथ शास्त्री

(राष्ट्रपति सम्मानित), प्रधान सम्पादक ''भारती''संस्कृत मासिक
पीठाचार्य, भाषामीमांसा एवं शास्त्रशोध पीठ - विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर
पूर्व अध्यक्ष - राजस्थान संस्कृत अकादमी
आधुनिक संस्कृत पीठ - जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय
पूर्व निदेशक - संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राजस्थान सरकार
सदस्य - संस्कृत आयोग, भारत सरकार

महाभारत के प्रायः सभी पात्र भारतीय जन जीवन में इतने घुल मिल गये हैं कि वे विभिन्न गुणों और मूल्यों के प्रतीक बन गये थे। युधिष्ठर सत्य, शील और धर्म के प्रतीक हो गये हैं, भीष्मपितामह प्रतिज्ञा-पालन और ब्रह्मचर्य के। अत्यन्त बलिष्ठ पुरुष भीमसेन को कहा जाता है और कुटिल एवं क्रोधी व्यक्ति को दुर्योधन। महाभारत के चरित्रों में से कथानक में स्थान और महत्त्व के दृष्टिकोण से यदि देखा जाय तो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पात्र अर्जुन ही सिद्ध होते हैं। श्रीकृष्ण को कुछ लोग महाभारत का एक मात्र नायक एवं प्रमुख चरित्र मानते हैं जिसका कारण संभवतः श्रद्धा और अवतार भावना ही अधिक है। उनके देवत्व और प्रभुत्व को यदि छोड़ दिया जाय तो महाभारत के मानव चरित्रों में उनके बाद अर्जुन का ही नाम आता है। कृष्ण अर्जुन के साथी बने, वे उनके अभिन्न मित्र तो थे ही अपनी बहिन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करवा कर वे उनके साले भी हो गये और गीता का उपदेश देकर उनके गुरु भी। कृष्ण और अर्जुन का यह जोड़ा महाभारत का महत्वपूर्ण युग्म है। नर और नारायण के रूप में अर्जुन और कृष्ण ही महाभारत के प्रतिपाद्य हैं। पाण्डवों में सभी दृष्टियों से अर्जुन सर्व श्रेष्ठ एवं प्रभावशाली हैं यद्यपि वयः क्रम में वे तीसरे हैं। पाण्डवों में युधिष्ठर और भीम उनसे बड़े भाई हैं, नकुल सहदेव छोटे भाई। अर्जुन कुन्ती के सबसे छोटे पुत्र हैं और कर्ण सबसे बड़े पर महाभारत में कर्ण और अर्जुन की प्रारंभ से ही लाग डांट रहती है और अंत में युद्ध में कर्ण अर्जुन के हाथों मारे जाते हैं।

अर्जुन के चरित्र में कुछ ऐसे गुणों का समावेश है जो परस्पर विरोधी होते हुए भी उनमें एक साथ पाये जाते हैं- और उन्हीं के कारण उन्हें सर्वगुण सम्पन्न कहा जा सकता है। एक आदर्श नायक की दृष्टि से वे संजीदा और गम्भीर हैं पर इतने क्षमाशील और अतिविनीत नहीं जितने युधिष्ठिर, वे बलशाली और ऊर्जस्वी हैं पर इतना उफनते नहीं जितने भीम। वे राजनीति, युद्धनीति और धनुर्विद्या के कौशल के प्रतीक हैं। अप्रतिम धनुर्धर, युद्धनीति कुशल एवं वीर होने के साथ उनका संगीत, नृत्य और वाद्य तथा इनकी शिक्षा में निपुण होना एक आश्चर्यजनक संयोग है।

बाल्यकाल में ही जब कौरव और पाण्डव द्रोणाचार्य से धनुर्वेद की शिक्षा ले रहे थे अर्जुन ने लक्ष्यवेध में कितनी दक्षता प्राप्त करली थी इस सम्बन्ध में वह कथा प्रसिद्ध है जब निशाने वाली की परीक्षा के समय अर्जुन को केवल लक्ष्यवेध की चिड़िया की आंख दिखलाई दे रही थी- और कुछ नहीं। निशाना साधने की यह एकाग्रता उनकी दक्षता का प्रमाण था। अपनी लगन के कारण अर्जुन ने द्रोणाचार्य से सम्पूर्ण धनुर्वेद तथा समस्त दिव्यास्त्रों की शिक्षा ले ली थी। द्रोणाचार्य ने अपने पुत्र अश्वत्थामा को भी इतने प्रेम से सारी विद्यायें नहीं दी थी जितनी अर्जुन को। उन्हें हाथ से भी बाण चलाने को पूर्ण अभ्यास था, इसीलिये उनका एक नाम सव्यसाची भी है। समस्त भूमण्डल में अपने समय के वे एक मात्र धनुर्धर थे यह द्रोणाचार्य ने जांच परख कर घोषित कर दिया था। महाभारत के अक्षर हैं-

प्रगाढदृढमुष्टित्वे लाघवे वेधने तथा।
क्षुरनाराचेमल्लानां विपाठानां च तत्त्ववित्।
ऋजुवक्रविशालानां प्रयोक्ता फाल्गुनोऽभवत्
लाघवे सौष्ठवे चैव नान्यः कश्चन विद्यते।
बीभत्सुसदृशो लोके इति द्रोणो व्यवस्थितः॥

द्रोणाचार्य द्वारा कौरवों और पाण्डवों की अस्त्र शिक्षा जब सम्पन्न हो चुकी तो समस्त राजाओं और नागरिकों की उपस्थिति में एक बहुत बड़ा अस्त्रकौशल प्रदर्शन आयोजित किया गया जिसमें सभी राजकुमारों ने अपने' अपने अस्त्र कौशल दिखलाए। महाभारत में इस टूर्नामेन्ट का बड़ा विस्तृत वर्णन है। इसमें अर्जुन के अस्त्र कौशल को देख कर सभी आश्चर्य चकित रह गये। उन्हें इस टूर्नामेन्ट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया। आजकल भी सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को दिये जाने वाले पुरस्कार का नाम अर्जुन पुरस्कार इसी आधार पर दिया गया है। इसी अवसर पर कर्ण ने उठ कर यह चैलेंज किया कि जो कौशल अर्जुन ने दिखाये हैं उन्हें मैं भी उसी प्रकार दिखला सकता हूँ। अस्त्र विद्या के कौशल कर्ण ने वहां दिखला भी दिये किन्तु उस समय सूत पुत्र और अज्ञातकुलशील होने के कारण उन्हें अधिक महत्त्व नहीं दिया गया। कर्ण ने पर्याप्त वाद-विवाद किया कि केवल कुल और जन्म के कारण कोई योद्धा या अस्त्रधारी छोटा बड़ा नहीं हो जाता यह तो प्रत्यक्ष हार या जीत का सवाल है। इसमें कुल परंपरा का क्या प्रश्न है। इस सबसे यद्यपि अर्जुन के महत्त्व में कोई कमी नहीं हुई पर तभी से कर्ण और अर्जुन में जो लोग डाँट शुरु हुई वह अंत तक चली। महाभारत में भीम और दुर्योधन का जिस प्रकार परस्पर विरोधी द्वन्द्व उभारा गया है उसी प्रकार अर्जुन और कर्ण का द्वन्द भी बराबर चित्रित है।

कर्ण भी अपने परिश्रम और गुणों से अच्छे योद्धा और धनुर्धर बन गये थे। पर ईर्ष्या की ग्रंथि और कुटिलों की संगति के कारण उनके गुण दब गये और सौभ्यता साधना और श्रीकृष्ण जैसे गरिमामय व्यक्तित्व की संगति से अर्जुन कुछ ऐसे

अभूतपूर्व गुण उभरते गये जिनसे उनका चरित्र कर्ण से कहीं ऊंचा बन गया। महाभारत के युवा धनुर्धरों में अर्जुन, कर्ण और अश्वत्थामा प्रायः बराबर की टक्कर के योद्धा बतलाये गये हैं। इनके पास बड़े भयंकर और दूरमारक अस्त्र थे जिनका प्रतीकार कठिन था। कर्ण के पास एक घातिनी शक्ति थी जौर अपने लक्ष्य को, चाहे वह कहीं भी भाग जाय, मार कर ही छोड़ती थी और उसके रहते उसके धारक को कोई नहीं मार सकता था। उसने इसे अर्जुन के लिये रख छोड़ा था पर श्रीकृष्ण ने ऐसी नीति चली की कर्ण का द्वन्द्व भीम के दानवी शक्तिशाली पुत्र घटोत्कच्च से करवा दिया। उसने इतना भीषण युद्ध किया कि उसे मारने के लिये कर्ण को यह शक्ति चलानी पड़ी। एक शत्रु को मारने के बाद यह शक्ति बेकार हो गयी और तब जाकर अर्जुन कर्ण को मार पाया। अश्वत्थामा के पास ब्रह्मास्त्र और नारायणास्त्र थे नारायणास्त्र का मुकाबला कोई अस्त्र नहीं कर सकता था। जमीन पर लेट कर नतमस्तक हो कर ही इसकी मार से बचा सकता था। अर्जुन नारायणास्त्र नहीं चला सकता था पर ब्रह्मास्त्र चलाना वह पूरी तरह से जानता था। इसके अतिरिक्त भूमण्डल का भीषणतम संहारास्त्र पाशुपतास्त्र भी अर्जुन के पास ही था जो उसने शंकर की आराधना कर प्राप्त किया था।

अश्वत्थामा ने समय-समय पर पाण्डवों पर नारायणास्त्र और ब्रह्मास्त्र चलाये। नारायणास्त्र से तो लेट कर और छिप कर बचा जा सका पर ब्रह्मास्त्र के मुकाबले में अर्जुन को भी ब्रह्मास्त्र चलाना पड़ा। यदि दोनों अस्त्र टकरा जाते तो पृथ्वी वर्षों तक झुलसी रहती। सारी मानव सृष्टि नष्ट हो जाती। इसीलिये नारद और व्यास जैसे महर्षियों ने अश्वत्थामा और अर्जुन से अपने अपने अस्त्रों को वापिस लेने का अनुरोध किया। अर्जुन ने अस्त्र वापिस ले लिया पर अश्वत्थामा को ब्रह्मास्त्र चलाना ही आता था वापिस लेना नहीं। अतं में उसके द्वारा अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा के गर्भस्थ शिशु को झुलसा कर अश्वत्थामा ने अपनी प्रतिहिंसा तृप्त की। श्रीकृष्ण ने झुलसे हुए इस शिशु को अपने प्रभाव से पुनर्जीवित कर पांडवों के वंश को नष्ट होने से बचाया। यह भी उल्लेखनीय है कि महाभारत के युद्ध के बाद जब पृथ्वी से प्रायः समस्त क्षत्रिय जाति समूल नष्ट हो गयी थी राजवंश को चलाने के लिये जो एक मात्र गर्भस्थ सन्तति बची थी वह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की सन्तान थी परीक्षित् रुप में। इसका पुत्र जन्मेजय हुआ और उसके द्वारा पुनः पृथ्वी पर क्षत्रिय वंश चला। इस दृष्टि से भारत का परवर्ती राजवंश अर्जुन का वंश माना जा सकता है।

जब खाण्डवप्रस्थ में पांण्डवों ने नगर बसाने की योजना बनाई तो यह आवश्यक हो गया कि वहां का बीहड़ जंगल साफ किया जाय और खूंखार पशुपक्षी मारकर भगाए जायें। इस हेतु अर्जुन और कृष्ण को कहा गया। यह निश्चय किया गया कि आग्नेय अस्त्रों से यह जंगल जला डाला जाय जिससे अग्निदेव की तृप्ति हो। अर्जुन की यह प्रकृति रही है कि किसी भी बड़े कार्य या युद्ध के पूर्व वह देवाराधना करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। खाण्डव वन को जलाने के इस विराट् कार्य के लिये उन्हें वरुण ने गाण्डीव धनुष दिया जो अभेद्य और अद्भुत क्षमता वाला शस्त्र माना जाता है। उसी समय उन्हें कपिध्वज रथ, आदि प्राप्त हुए। खाण्डव वन को जाने के समय जो भीषण कार्य हुए उनमें अर्जुन की प्रतिष्ठा बहुत फैल गयी।

अर्जुन का चरित्र इसलिये भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि उनके गुणों के कारण समझे या अन्य किसी कारण श्रीकृष्ण की अभिन्न मित्रता व्यक्तिशः यदि किसी ने प्राप्त की तो अर्जुन ने ही। प्रारंभ से श्रीकृष्ण उनके मुख्य सलाहकार मित्र व साथी रहे। बलरामजी ने अपनी बहिन सुभद्रा का विवाह कहीं अन्यत्र करना चाहा था किन्तु श्रीकृष्ण अर्जुन से अच्छा वर उसके लिये नहीं देख पा रहे थे। अर्जुन का रूख भी सुभद्रा की ओर देख कर उन्होंने एक अन्य युक्ति सोची। उन्होंने अर्जुन को यह सलाह दे डाली कि वे उसका हरण कर ले जाँय। बाद में उन्होंने बलरामजी को समझाबुझा कर यथाविधि सुभद्रा का विवाह अर्जुन से करवा दिया। महाभारत में द्रौपदी, सुभद्रा, उलूपी और चित्रांगदा ये चार अर्जुन की पत्नियां भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों से आई हुई बतलाई गयी हैं। युद्ध में सारथी के रूप में श्रीकृष्ण का निरंतर साहचर्य और मार्गदर्शन, युद्ध के पूर्व गीताज्ञान की प्राप्ति और जीवन के प्रत्येक पहलू में उनकी मित्रता का सुखद संपुट ये अर्जुन के चरित्र को विशिष्ट बना देने वाले कुछ तत्त्व हैं। कृष्ण का साहचर्य और अर्जुन का गाण्डीव न होता तो इच्छा मृत्यु भीष्मपितामह कभी नहीं मारे जा सकते थे। शिखंडी को आगे करके अर्जुन जब भीष्म पर बाण बरसा रहे थे तो भीष्म अर्जुन के बाणों की मार को साफ पहचान रहे थे।

अर्जुनस्य इमे बाणा नैते बाणाः शिखण्डिनः ।
सीदन्ति मम गात्राणि.....।।

भीष्म अपनी इच्छा से मृत्यु का वरण कर जब शर शय्या पर सोते हैं और उनका सिर नीचे लटक जाता है तो वे अपने अनुयायियों से तकिया मांगते हैं बड़े अच्छे-अच्छे तकिये राजा लोग लाकर पेश करते हैं। पर उन्हें संतोष नहीं होता। अर्जुन अपने धनुष से तीन बाण उनके सिर में इस प्रकार मारते हैं कि वह ऊंचा होकर उन पर टिका रहे। इससे भीष्म को संतोष होता है। इसी प्रकार उनके पानी मांगने पर और स्वर्ण पात्रों में लाये गये पानी को उनके लौटा देने पर अर्जुन अपने एक तीक्ष्ण बाण से उनके निकट ही पृथ्वी का छेदन करके जल निकालते हैं और उसकी धारा से भीष्म को तृप्त कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

युद्ध कला में उसकी प्रवीर्णता इसी से स्पष्ट है कि चक्रव्यूह और सर्वतोभद्र व्यूह के भेदन में पाण्डव सेना में एकमात्र योद्धा वही है। अर्जुन जब संशप्तकों करते हुए दक्षिण में कुछ दूर चले जाते हैं तब उनकी अनुपस्थिति में कौरव सेनापति द्रोण चक्रव्यूह में सेना का सन्निवेश करते हैं। पाण्डव यह सोचकर घबरा जाते हैं कि कृष्ण और अर्जुन की अनुपस्थिति में इस चक्रव्यूह का भेदन कौन करेगा। अभिमन्यु को जो उसके पुत्र और शिष्य होने के अतुल्य पराक्रमी और योद्धा हैं, उसे तोड़ने भेजा जाता है। अकेला छः महारथियों दांत खट्टे कर अंत में निहत्था होने के कारण अन्यायी जयद्रथ के द्वारा वह मार दिया जाता है। पांडव सेना में हा हा कार मच जाता है। अर्जुन संशप्तकों को हरा कर जब लौटते हैं और उन्हें मालूम होता है कि उनका प्रिय अभिमन्यु जो स्वयं अप्रतिम योद्धा था, अकेला व्यूह में भेज दिये जाने के कारण अन्याय से जयद्रथ द्वारा मार

दिया गया तो एक बार उन जैसा धीरोदात्त व्यक्ति भी विचलित हो जाता है। अर्जुन जैसे गम्भीर और विनयी महापुरुष भी एक बार क्षोभ एवं शोक से आशा खो देते हैं। जिस जिव्हा से बड़े भाई युधिष्ठर के प्रति कठिन से कठिन समय में भी एक भी उद्धत शब्द नहीं निकला था वह उन्हें बुरा भला कहने लगती है कि उन्होंने अकेले उस किशोर को व्यूह में कैसे भेज दिया। अन्यायी जयद्रथ पर उस समय अर्जुन को जो क्रोध आता है और दूसरे दिन शाम तक उसका सर धड़ से उड़ा देने की जो भीष्म प्रतिज्ञा वे करते हैं उसकी खबर सुनते ही कौरव सेना के दिल दहल जाते हैं। पुत्र शोक विह्वल अर्जुन के मुंह से पहली बार अपने पराक्रम और शक्ति का वर्णन करने वाले वाक्य निकलते हैं। उनकी शक्ति का एहसास महाभारत के इन श्लोकों से भी प्रकट होता है।

असुरसुरमनुष्याः पक्षिणो वोरगा वा
पितृरजनिचरा वा ब्रह्मदेवर्षियो वा।
चरमचरमपीदं यत्परं चापि तस्मात्
तदपि मम रिपुं तं रक्षितुं नैव शक्ताः।
यदि विशति रसातलं तदग्यं
वियदपि देवपुरं दितेः पुरं वा
तदपि शरशतैरहं प्रभाते
भृशमभिमन्युरिपोः शिरोऽभिहर्ता॥

चाहे चराचर की समस्त भक्तियां एक हो जायं, चाहे अभिमन्यु का हत्यारा ब्रह्माण्ड के किसी लोक में जा छिपे और चाहे समस्त देवासुर उसे बचाने को जुट जाँय कल शाम तक उसका सिर बाणों द्वारा कटा हुआ आप देखेंगे।

इस भीषण प्रतिज्ञा के परिणामस्वरूप दूसरे दिन कितना तुमुल युद्ध हुआ होगा इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। इस प्रकार के जोशीले और दर्पोक्तियों से भरे अर्जुन के वाक्य कहीं कहीं ही महाभारत में मिलेंगे अन्यथा अर्जुन के चरित्र की विशेषता उनकी सौम्यता शालीनता तथा विनयशीलता है। अपने गुरु द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म तथा बड़े भाई युधिष्ठिर के सम्मुख हम उन्हें सदा विनयी एवं आज्ञाकारी ही पाते हैं। भीम चाहे जोश और क्रोधावेश में युधिष्ठिर की आज्ञा का पालन करने में आनाकानी कर जाँय, अर्जुन उनका अनुगमन अक्षरशः करते हैं। उनकी आज्ञा से ही वे वनवास के समय उत्तर दिशा की यात्रा करते हुए इन्द्र-लोक तक जाते हैं और शंकर को प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र प्राप्त करते हैं तथा इन्द्र की प्रेरणा से अनेक दिव्यास्त्रों की शिक्षा लेते हैं। यह भारत युद्ध की तैयारी के लिये सामग्री एवं अस्त्र शिक्षा है। इन्द्र के महल में रहते हुए वे संगीत, वाद्य और नृत्य की योजनाबद्ध एवं विधिवत् शिक्षा प्राप्त करते हैं और केवल गान वादन, नृत्य आदि में निपुणता

ही नहीं उनकी शिक्षा देने का कला भी इन्द्र की रंगशाला के प्रमुख चित्रसेन गन्धर्व से सफलता पूर्वक प्राप्त कर लेते हैं। युद्ध कौशल के साथ यह कला कौशल अर्जुन के व्यक्तित्व की विशेषता है। यहीं हम अर्जुन की नैतिक और चारित्रिक दृढ़ता का भी एक उदाहरण पाते हैं। इन्द्र की राजसभा में अर्जुन को उर्वशी अप्सरा की कला की प्रशंसा करते देख कर एक दिन चित्रसेन गंधर्व उर्वशी से कहता है कि अर्जुन तुम पर बहुत रीझ रहे हैं। उर्वशी श्रृंगार कर अर्जुन के पास पहुँचती है। और उसके रूप गुणों का बखान करते हुए उनसे प्रणय याचना करती है। अर्जुन अविचल भाव से उसे उत्तर देते हैं कि क्षत्रियों के पूर्वज पुरूरवा की अर्धांगिनी और इन्द्र की सेविका होने के कारण उर्वशी उनकी पूज्या है। वे उसकी याचना स्वीकार करने में अक्षम है। इस पर क्रुद्ध होकर उर्वशी उन्हें शाप देती है कि नपुसंकों की तरह प्रणय निवेदन ठुकरा देने वाला अर्जुन क्लीब हो जायेगा। इन्द्र को जब यह सारी बात मालूम होती है तो वे अर्जुन की प्रशंसा करते हैं और क्लीबता के इस शाप को केवल एक वर्ष तक ही सीमित कर देते हैं। क्लीबता का यह अभिशाप अर्जुन के लिये वरदान सिद्ध होता है क्यों कि कौरवों की शर्त के अनुसार बारह वर्ष के बनवास के अनन्तर पाण्डवों के लिये एक वर्ष का अज्ञातवास करना आवश्यक था और इस अज्ञातवास के समय अर्जुन जैसा योद्धा यदि क्लीब के रूप में कहीं भी रहे तो उसे कौन पहचान सकेगा? इसीलिये वनवास के अनन्तर उर्वशी के शाप से प्राप्त क्लीबता का लाभ उठाकर अर्जुन वृहन्नला नाम से मत्स्य नरेश विराट के अन्तः पुर में उनकी कन्या उत्तरा के नृत्य संगीत शिक्षक के रूप में एक वर्ष रहते हैं। यहां उनकी संगीत नृत्य शिक्षा की दक्षता भी काम आती है और उन्हें कोई पहचान नहीं पाता। अचानक मत्स्य देश पर हमला हो जाता है और जब मत्स्य प्रदेश का कोई योद्धा उसका प्रतिकार करने में सफल नहीं होता तो नृत्य शिक्षिका बृहन्नला अपने अस्त्र कौशल का परिचय देती है। अर्जुन की युद्ध कला और उनके बाणों को तुरन्त पहचान लिया जाता है और दोनों ओर की सेनाओं में ये बात फैल जाती है कि नृत्य शिक्षक के वेष में यह अर्जुन ही है। किन्तु तब तक अज्ञातवास का एक वर्ष पूरा हो चुका होता है। और पहचान लिये जाने से पाण्डवों को कोई खतरा नहीं रहता।

इस प्रकार जीवन के विविध कड़वे-मीठे अनुभवों के इन्द्रधनुषी ताने बाने में अर्जुन का चरित्र विकसित होता है। इसी वैविध्य में उनकी विशिष्टता निहित प्रतीत होती है। लगता है महाभारत कार ने एक आदर्श एवं सफल नायक का चरित्र स्थापित करने के उद्देश्य से ही विभिन्न परिस्थितियों एवं विविध उतार चढ़ावों के बीच आदर्श नायक के रूप में ही अर्जुन के पात्र की सृष्टि की है।